द्‌वितीय अध्याय

''मोहन राकेश के उपन्यास : संक्षिप्त परिचय''

द्वितीय अध्याय

"मोहन राकेश के उपन्यास : एक संक्षिप्त परिचय"

प्रस्तावना -

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासकारों में मोहन राकेश का नाम उल्लेखनीय मानना होगा । राकेश जी एक ऐसे उपन्यासकार है, जिन्होंने जो देखा है, भोगा है और चाहा है उसे ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है । उनका यह बहुमुखी व्यक्तित्व उपन्यास के क्षेत्र में भी परिलक्षित होता है । राकेश जी के अंदर लोकप्रियता के वे सारे गुण विद्यमान थे जो किसी लेखक को शिघ्र ही सफल बना देते हैं । राकेश जी के उपन्यास मध्यवर्गीय समाज से संबंधित हैं ।

राकेश जी का कथा संसार कोरी कल्पना की उपज नहीं हैं । उनके उपन्यासों के पात्र हमारे चारों ओर बिखर पड़े है । राकेश जी के उपन्यासों में मानवीय संबंधों और उनके संकटों का और साथ ही साथ बदलते और टूटते हुए सामाजिक मूल्यों का चित्रण दिखाई देता है । उनकी रचनाएँ वैयक्तिक अनुभवों से पुष्ट हैं । राकेश जी ने मध्यवर्ग को ही अपनी रचनाओं के लिए चुना है । उनके उपन्यास मूलतः मानवीय संबंधों को अपना वर्ण विषय बनाकर चले हैं और उनका मूलाधार मध्यवर्गीय चेतना के पात्र हैं । राकेश जी के पात्र उनके इशारों पर नाँचते नहीं, स्वतंत्र बुद्धि से विचार करके अपनी समस्याओं का सामना करते हैं ।

राकेश जी के अब तक जितने उपन्यास प्रकाशित हुए हैं उनका संक्षिप्त विवेचन यहाँ प्रस्तुत है --

2.1 अंधेरे बंद कमरे -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'अंधेरे बंद कमरे' यह मोहन राकेश का पहला और सबसे बृहत उपन्यास है । इसका प्रकाशन सन् 1961 में हुआ है । यह राकेश की प्रथम एवं अन्यतम कृति है । इस उपन्यास में देश के आडंबर पूर्ण सांस्कृतिक आंदोलन और इसके ऱ्हास की वास्तविकता को लेखक ने सात बार बसी और उजड़ी राजधानी दिल्ली का 'रेखाचित्र' अथवा पत्रकार मधुसूदन की 'आत्मकथा' अथवा हरबंस और नीलिमा के अंतर्द्वंद्व की कहानी है । राकेश जी ने इस उपन्यास में संस्कृति के नाम पर असंस्कृत प्रदर्शन, प्रचार प्रधान आंदोलन, शिक्षितों के निरुद्देस वादविवाद, कॉफी हाऊस में टूटी जिंदगी की फिकी मुस्कान आदि के वर्णन से इस कृति में

दिल्ली में उभरनेवाली नई संस्कृति की ओर भी संकेत किया है । राकेश जी ने इस संस्कृति को बहुत करीब से देखा है । इस उपन्यास में मुख्य कथा के साथ - साथ अन्य गौण कथाएँ भी समय - समय पर साथ चलती है और बीच में ही समाप्त हो जाती हैं । इस उपन्यास का परिचय देते हुए राकेश जीभूमिका में लिखते हैं - "दिल्ली का रेखाचित्र ? पत्रकार मधुसूदन की आत्मकथा ? हरबंस और नीलिमा के अन्तर्द्वन्द्व की कहानी ?" [1]

इस उपन्यास की संपूर्ण कथा चार शीर्षक हीन खंडों में विभाजित है । इसके पहले भाग की कथावस्तु इस प्रकार है - मधुसूदन नौ वर्ष बाद दिल्ली लौट आया है । वह लखनौ से दिल्ली आकर अब न्यू हैरल्ड में संवाददाता है । दिल्ली आते ही उसे काफी परिवर्तन हुआ नजर आता है । उसी समय कुछ लोग उसे खुलकर मिले, उनसे खुलकर बातें करने के बाद भी उसे लगता है - "हम लोगों के बीच कहीं एक लकीर है - बहुत पतली-सी लकीर जिसे हम चाहकर भी पार नहीं कर पाते ।"[2] कुछ देर बाद वह काफी पीने चला जाता है । जाते समय उसकी मुलाकात हरबंस से सिंधीया हाऊस के स्टॉप पर होती है । हरबंस को दिल्ली आये तीन साल हो चुके हैं । उनके घर में तीन वर्षीय पुत्र अरुणऔर पत्नी नीलिमा है । हरबंस मधुसूदन को अपने घर चलने का आग्रह करता है । मधुसूदन का हरबंस से परिचय उनका एक मित्र प्रेमलूथरा ने करवाया था । उसी समय मधुसूदन को मालूम हुआ कि हरबंस दिल्ली के एक कॉलेज में इतिहास विषय पढ़ाता है ।

मधुसूदन दिल्ली आकर अपना मित्र अरविंद के साथ कस्साबपुरा की गंदी बस्ती में किराये के कमरे में रहता था और वही ठकुराईन के घर में खाना भी खाता है । उस समय मधुसूदन को हर वक्त घर की चिंता सताती थी । मधुसूदन जिस बस्ती में रहता था वही इबादत अली भी अपनी बेटी खुरशीद के साथ रहता था । इबादत अली को सितार बजाने की आदत थी । वह रात के समय जब सितार बजाता था तब मधुसूदन के मन का बोझ हल्का होता था । उसके बारे में मधुसूदन कहता है - "रात की खामोशी में जब इबादत अली सितार बजाता था, तो मेरी नसों में भरी हुई ऊब और झुँझलाहट धीरे - धीरे कम होने लगती थी ।" [3] इबादत अली के पास बैठकर सितार सुनने की उसकी इच्छा थी, लेकिन वह अन्य लोगों की टीका-टिप्पणी से डरता था ।

'इरावती' में पत्रकार के रूप में मधुसूदन को नौकरी मिलती है तो ठकुराईन को खुशी होती है । उसी खुशी में वह मधुसूदन को ढाई रुपये देती है । वह रुपये लेकर कॅनॉट प्लेस घुमने जाता है । घुमने के बाद कॉफी हाऊस में चला जाता है । वहा उसका परिचय हरबंस, नीलिमा और उसकी बहनें शुक्ला और सरोज से होता

है । तब ठकुराईन द्वारा दिए रुपये हरबंस और नीलिमा को कॉफी पिलाने में खत्म हो जाते हैं । बाद में वे लोग हरबंस के घर चले जाते हैं । रात का भोजन करने के बाद पैसे खत्म होने के कारण मधुसूदन पैदल ही कस्साबपुरा पहुँचता है । वह कस्साबपुरा पहुँचता है परंतु रास्ते में काठबाजार में मिले पहलवान के आतंक से मधुसूदन मुक्त नहीं होता ।

मधुसूदन 'ईरावती' में काम करना शुरू करता है । तब उसे वहाँ के दाँव-पेंच, षड़यंत्र मालूम होते हैं । उधर हरबंस चाहता है कि अपनी पत्नी नीलिमा चित्रकला में रूचि ले । परंतु वह नृत्य करना पसंद करती है । इस प्रकार दोनों की रूचि में भिन्नता है । इसी कारण दोनों में तनाव पैदा होता है । साथ -ही -साथ जीवन भार्गव और शुक्ला की शादी होनेवाली है यह अफवा सुनकर हरबंस उदास होता है और मधुसूदन को अपने घर बुलाता है । मधुसूदन उनके घर जाता है । तब हरबंस वहाँ था नहीं । मधुसूदन वहाँ एक विचित्र चित्र देखता है । नीलिमा रात के सोने का धारदार पाजामा और कमीज पहने थी । उसके मुँह में आधी पी हुई सिगरेट थी । उसी समय मधुसूदन को देख नीलिमा कहती है - "तुम्हें मेरा सिगरेट पीना बुरा तो नहीं लग रहा ? बुरा लग रहा हो तो बुझा दूँ ? मैं घर में कभी - कभार एकाध सिगरेट पी लेती हूँ । हरबंस ने मेरी आदतें बहुत बिगाड़ रखी हैं ।"[4] थोड़ी देर बाद हरबंस आता है तब दोनों में बातचित चलती है । हरबंस शुक्ला और भार्गव के शादी की बात से चिढ़ा था । उसने जीवन भार्गव को पहले डाँटा और बाद में नीलिमा ने हरबंस को । तब हताश-निराश होकर वह लंदन जाने का फैसला करता है । वह लंदन जाते समय शुक्ला सुबक पड़ती है परंतु नीलिमा स्वस्थ थी । हरबंस लंदन चले जाने पर मधुसूदन खोया हुआ, थका और तनावग्रस्त रहने लगा । कॉफी हाऊस में शुक्ला को सुरजीत के साथ देखकर मधुसूदन को असह्य लगा । वह अब अपने आप को शुक्ला के विचारों से मुक्त नहीं कर पा रहा था ।

एक दिन अचानक नीलिमा मधुसूदन के घर आकर उसे अपने घर ले जाती है । हरबंस के पत्र उसके हाथ में दे कर उससे राय माँगती है कि मुझे क्या करना चाहिए ? वह कहती है कि हरबंस मुझे लंदन बुलाता है लेकिन मैं अपनी भरत नाट्यम की ट्रेनिंग पूरी करना चाहती हूँ । यह मौका मैं खोना नहीं चाहती । परंतु मधुसूदन भी नीलिमा को सही राय नहीं दे सका । सही राय न दे सकने के कारण वह रात को थोड़ी शराब पीकर घर लौटता है । तब वहाँ ठकुराईन उनकी राह देख रही थी । वह घर आकर एक हाथ ठकुराईन के कंधे पर रखता है, तब

ठकुराईन दूर खड़ी हो जाती है । उसके बाद अगले दिन ही वह नौकरी से त्यागपत्र देता है और दिल्ली से नौकरी छोड़ चला जाता है । यहाँ उपन्यास का पहला भाग पूरा होता है ।

उपन्यास का दूसरा भाग तेरह अक्टूबर सन् उनसठ के दिन कॉफी हाऊस में बैठे मधुसूदन और हरबंस के बातचीत से शुरू होता है । वहाँ बैठे - बैठे हरबंस ने अपनी लंदन में रहने की बात उसे बताई । उसके साथ - साथ नीलिमा के भरत नाट्यम की बात तथा शुक्ला और सुरजीत का विवाह हो गया है आदि बातें बताता है । हरबंस नीलिमा के नृत्य के बारे में कहता है - "वह ट्रेनिंग लेकर ही लन्दन आयी थी । उन्होंने वहाँ कई जगह पर नृत्य का प्रदर्शन भी किया । लन्दन के अलावा मोट्रड़, पैरिस, बर्न और बॉन वगैरह में भी । वह काफी दिन उमादत्त के ट्रुप के साथ रही हैं । उमादत्त की मुख्य पार्टनर उर्वशी के छोड़ जाने पर उसकी जगह वहीं उमादत्त के साथ सारे युरोप का चक्कर लगाती रही ।" [5] वह यह कहता है कि मैं पहली बार उसके साथ नहीं गया था मगर दूसरी बार गया था । आदि बातें करने के बाद दोनों एक - दूसरे से बिदा लेकर चले जाते हैं ।

राजधानी दिल्ली में प्रेजिडेंट आइजन हावर के आगमन के कारण चारों तरफ एक हलचल मची थी । इधर मधुसूदन को अपने पत्र के लिए कोई स्कूप न मिलने के कारण वह उदास होकर कॉफी हाऊस चला जाता है । वहाँ सुरजीत को पाकर शुक्ला के संदर्भ में पुन: उसके मन में अस्थिरता निर्माण होती है । कुछ समय बितने के बाद वह हरबंस के घर पहुँचता है । वह हरबंस से कही गई युरोप की बातों के साथ-साथ सुरजीत और शुक्ला की बात भी सुनता है । उन दोनों की शादी की बात पर हरबंस दर्द का अनुभव करता था । मधुसूदन वहाँ से वापस लौटता है । जब दूसरी बार मधुसूदन हरबंस के घर चला जाता है तब उसके घर में सब खामोश थे । वहाँ हरबंस और नीलिमा के बीच शुक्ला की बेटी की वर्ष गाँठ को लेकर विवाद चल रहा था । नीलिमा बेटे अरुण को लेकर जाना चाहती थी, तो हरबंस उसे विरोध करता था । फिर भी वह अरुण को लेकर चली जाती है । उसी समय हरबंस और मधुसूदन निश्चिंत होकर मिस सुषमा श्रीवास्तव के बारे में बातचीत करते हैं । हरबंस बताता है कि - "वह बेवकूफ भी है और बद्तमीज भी है ।"[6] बाद में हरबंस विदेश में बताये दर्दपूर्ण दाम्पत्य जीवन की कथा सुनाते हुए कहता है - "मैंने हाई कमीशन की नौकरी छोड़ दी थी और थोड़ी आय पर ही अपना गुजारा करते थे । मैं उन दिनों बहुत गंभीर होकर अपने थीसिस के काम में जुटा था । हर शाम किसी न किसी वजह से हम दोनों में लड़ाई होती थी । लड़ाई के कारण तीन वक्त में से उनका एक वक्त का खाना गोल हो जाता था । उनके कलहमय दाम्पत्य जीवन की

बात चल रही थी तब अरुण के आने के कारण बीच में बाधा पड़ती है । तब मधुसूदन पुस्तकों के शेल्फ के पास चला जाता है और पुस्तकें देखता रहता है ।

यहाँ से युरोप की कथा आगे बढ़ती है । हरबंस की नौकरी छूट गई है । नीलिमा बी.बी.सिटर में नौकरी करने लगी है । एक बार हाई कमीशन के किसी उत्सव में नृत्य का प्रदर्शन करने के बाद उसे बी.बी.सी. पर इक्का-दुक्का प्रोग्राम मिलने लगा था । परंतु इससे भी तंग आकर वह उमादत्त की ट्रुप के साथ नृत्य करने के लिए युरोप की यात्रा पर जाने का निश्चय करती है । इसी कारण भी दोनों में झगड़े होते हैं । आखिर वह चली जाती है । कुछ दिनों के बाद उमादत्त की सारी ट्रुप वापस आती है परंतु नीलिमा नहीं आती । वह एक तबला बजानेवाला सरदार और एक बर्मी कलाकार के साथ पैरिस में ही रहती है । दूसरे दिन तबला बजानेवाला सरदार वापस लौटता है मगर वह बर्मी कलाकार के साथ ही अकेली रह जाती है । नीलिमा के अभाव के कारण हरबंस ने जिस तनाव, व्यग्रता और यातना का अनुभव किया वह मधुसूदन को बतलाता है । कुछ दिनों बाद नीलिमा वापस आती है तो दोनों में विश्वास - अविश्वास की बातें चलती हैं । तब नीलिमा वहाँ रुकने का कारण बताती है और बाद में वापस आने का भी । नीलिमा कहती है कि मैंने ऊबानू के साथ रहकर भी तुम्हारे साथ कोई विश्वासघात नहीं किया था । फिर दोनों आपस में बिना मतभेद किए मिले रहते हैं ।

उसके बाद उनका जीवन एक नया मोड़ लेता है । नीलिमा उमादत्त के ट्रुप में सम्मिलित होती है और हरबंस उस ट्रुप का प्रबंधक के रूप में युरोप में घूमता है । लेकिन उनका यह सफर सफल नहीं होता । उसी समय हरबंस को बहुत पछतावा होता है । वह कहता है - "मैं आज ही लन्दन वापस जा रहा हूँ ।"[7] इसी कारण भी दोनों में तनाव पैदा होता है । उन दोनों की बातचीत चल रही थी तब उसी समय नीलिमा वहाँ पहुँचती है । इसके आगे की कहानी वह मधुसूदन को ओखला से लौटते हुए सुनाती है । उसे युरोप में रहने का कारण भी बताती है । बातचीत करते - करते दोनों घर लौटते हैं ।

इस बीच हरबंस दो बार घर आकर लौट गया था । जब हरबंस बहुत देर बाद भी घर नहीं लौटा तब नीलिमा और मधुसूदन उसे ढूँढ़ने के लिए निकलते हैं । तब हरबंस उन्हें इंडिया गेट के पास लेटा हुआ दिखाई देता है । वहाँ भी नीलिमा उसके साथ लड़ने लगी । यहाँ उपन्यास का दूसरा भाग पूरा होता है ।

तीसरे भाग के शुरू में ही मधुसूदन को राजनीतिक रिपोर्टिंग से निकालकर सांस्कृतिक विभाग में काम करने के लिए कहा गया । वह दिल्ली की ऐतिहासिक चेतना कला को एक बार अपनी दृष्टि से देखता है । दिल्ली कैसे लुटी गई ? अकबर और शाहजहाँ के वंशज मुहम्मद शाहा ने नादिरशाहा के सामने घुटने क्यों टेके ? आदि पर दृष्टिपात करते - करते वह दिल्ली महानगर के विविध क्षेत्र, रोड़ बाजार आदि से गुजरकर चांदनी चौक में भटकता हुआ कॉफी हाउस पहुँचा जो परमहंसों का अड्डा है । वहाँ एक जमघट में पत्रकार दूसरे जमघट में सुंदर सुनेजा पिटा-रोज की कम्पनी का डिस्ट्रीब्युशन इनचार्ज, लाइफ इंश्योरेंन्स एजेंट तथा दलाल आदि हैं । तीसरा जमघट आर्ट सर्कल का है । यह सबसे आकर्षक और लोकप्रिय सर्कल है । इसमें कुछ रंगमंच के निर्देशक और कुछ पुराने अनुभवी कलाकार हैं । दो-एक नाटककार आदि है । चौथा जमघट लेखक कवि और आलोचकों का है । थोड़ी देर बाद हरबंस अपने परिवार सहित वहाँ आता है । वहाँ पर भी हरबंस और नीलिमा में नृत्य - कला प्रदर्शन के विषय पर झगड़ा होता है ।

मधुसूदन एक फीचर बना रहा था इसी कारण वह अपने साथ दफ्तर के फोटोग्राफर को लेकर दोनों दरीबा में घूम रहें थें । फोटोग्राफर सुबह से भूखा - प्यासा गलियों में चक्कर काटता हुआ बुरी तरह तंग आ गया था । अब वह घूमना नहीं चाहता था । लेकिन मधुसूदन और तीन-चार इलाके घूमना चाहता था । इसी कारण फोटोग्राफर अपना छोटा कैमरा मधुसूदन को देकर वापस चला जाता है । मधुसूदन घूमते-घूमते ठकुराईन के घर पहुँचता है ।

ठकुराईन के घर पहुँचने के बाद वह आश्चर्य चकित होता है । ठकुराईन का हाल बहुत बुरा था । ठकुराईन काफी बूढ़ी लगती थी । उनके पति ठाकुर दमे के कारण चल बसे थे । ठकुराईन उनका प्रेमपूर्वक स्वागत करती है और मुहल्ले के इबादत अली और उसकी बेटी खुरशीद की जानकारी देती है । साथ ही वह अपनी बेटी की शादी की चिंता व्यक्त करती है । उससे बातचीत कर वह आफिस पहुँचता है । इधर हरबंस उसका इंतजार कर रहा था । वह मधुसूदन और नीलिमा को लेकर पोलिटिकल सेक्रेटरी के घर पहुँचता है । वहाँ चित्रों को देखकर शीर्षक ढूंढने का खेल देखता है । थोड़ी देर बाद सब लोग शराब पीते हैं । बाद में संगीत शुरू होता है और सब लोग नृत्य करने लगते हैं । वहाँ से लौटने के बाद हरबंस उदास रहता है । मधुसूदन उसे उदासी का कारण पूछता है परंतु वह नहीं बताता । पोलिटिकल सेक्रेटरी हरबंस को उसकी वर्तमान नौकरी से तीन गुना ज्यादा तनख्वाह देना चाहता है । परंतु

हरबंस तैयार नहीं है । उसे जो फॉर्म दिए थे वह कहीं फाड़ न दे इसलिए नीलिमा उसे अपने पास लेती है । यहाँ उपन्यास का तीसरा भाग पूरा होता है ।

चौथे भाग में दिल्ली के कला निकेतन ने नीलिमा के नृत्य का स्पोन्सर करने का भार अपने ऊपर ले लिया है । परंतु हरबंस शो के खिलाफ था और नीलिमा शो के पक्ष में थी । इसी कार्यक्रम को लेकर दोनों में तनाव पैदा हुआ । अंत में नृत्य का कार्यक्रम रखा जाता है । तब कार्यक्रम के टिकट बेचने के लिए हरबंस ना- ना करके तैयार होता है । परंतु वह काफी कुढ़ता रहता है । नीलिमा के नृत्य के उपलक्ष्य में पत्रकार एवं अन्य विशिष्ट व्यक्तियों के लिए भोजन का आयोजन किया जाता है । इसमें पोलिटिकल सेक्रेटरी दम्पति, विदेशी प्रोफेसर दम्पति, दिल्ली कला निकेतन के गुप्ता आदि उपस्थित थे । जाते समय पोलिटिकल सेक्रेटरी अगली लाईन की दो टिकटें खपाने की जिम्मेदारी लेता है ।

नृत्य को लेकर दोनों में तनाव पैदा होता है । हरबंस की वह तनावपूर्ण स्थिति देख नीलिमा उसे ट्रांकिलाइजर की टिकिया देने के बात करती है । तब हरबंस कहता है - "अच्छी नींद ! अच्छी नींद अब शायद मुझे जिन्दगी भर कभी नहीं आयेगी ।"[8]

बीच में ही मधुसूदन और सुषमा का 'ला बोहीम' में मिलने का संकेत मिलता है । दोनों वहाँ खाना खाकर और कॉफी लेकर निकटतापूर्ण बातें करते हैं । बाद में दोनों सुषमा के कमरे पर चले जाते हैं । वहाँ दोनों अलिंगन बद्ध होते हैं । मधुसूदन उसे नीलिमा के शो में आने का आग्रह कर चला जाता है ।

अचानक एक दिन सुबह ठकुराईन पता लगाते हुए मधुसूदन के घर पहुँचती है । वह पूछती है कि "हम लोगों के घर की रपट तुमने ही की थी ?"[9] वह आगे कहती है कि कमेठीवालों ने सब्जीवालों को हटा दिया है । सारा मुहल्ला कहता है कि यह तुम्हारा ही काम है । तब वह बताता है कि यह लेख मैंने ही लिखा था । उसका कथन सुन ठकुराईन आक्रोश में आती है । जाते समय कहती है कि मैं आपका नाम वहाँ नहीं बताऊँगी । ठकुराईन के बारे में इंद्रनाथ मदान लिखते है वैसे "ठकुराईन का मुख्य कथा से कोई संबंध नहीं, मगर अपनी सजीवता के कारण उसने उपन्यास में अपनी एक जगह बना ली है ।"[10]

आखिर नीलिमा के शो का दिन आ जाता है । शो के दिन भी झगड़े के कारण वह दुःखी थी । शो देखने के लिए प्रेक्षक कम थे । नृत्य का कार्यक्रम होता है । समाचार पत्रों में कटु आलोचना कम, मिश्र

प्रतिभाव ज्यादा था । तब दोनों में तनाव और बढ़ता है । एक दिन नीलिमा बेटे अरुण को साथ लेकर अपने बीजी के घर चली जाती है । मधुसूदन को यह जानकारी शुक्ला देती है और उसे वापस बुलाने की बिनती करती है । शुक्ला के आग्रह पर वह उसे बुलाने चला जाता है मगर खाली हाथ ही वापस लौटता है । तब तक हरबंस की सारी व्यवस्था शुक्ला कर रही थी । शुक्ला उसे हरबंस के पास रहने के लिए कहती है और नीलिमा के व्यक्तित्व के बारे में बताती है - "उनके स्वभाव को मैं और लोगों से ज्यादा जानती हूँ । बल्कि जितना वे खुद जानती हैं, उससे भी ज्यादा जानती हूँ । उन्हें जिन्दगी में जो कुछ मिला है उसकी वे परवाह नहीं करती, और जो कुछ नहीं मिला उसी के पीछे भटकती है ।"[11] बाद में वह हरबंस के पास चला जाता है ।

घर की सारी व्यवस्था तो शुक्ला ने संभाल ली थी । वह छोटी - छोटी सुविधा की ओर ध्यान दे रही थी तब पहली बार हरबंस को यह घर 'घर' लगा था । सुबह उठने के बाद मधुसूदन नीलिमा को रसोई घर में देखता है । वह चाय लेकर आती है । तब बताती है कि मुझे बुलाने सुरजीत आया था क्योंकि शुक्ला को बुखार आया है ।

अंत में मधुसूदन संपादक से मिलने चला जाता है । तब संपादक पहले फीचर की प्रशंसा करता है और उसे दूसरा फीचर तैयार करने के लिए कहता है । दूसरा फीचर मधुसूदन विदेशी पैसा किस प्रकार सांस्कृतिक केंद्र के नाम पर व्यय हो रहा है इस विषय पर करना चाहता है । लेकिन संपादक उसे राजनीति से संबंधित होने कारण मना करता है । तब मधुसूदन टैक्सी में बैठकर टैक्सी कस्साबपुरा ले जाने को कहता है । यहाँ उपन्यास समाप्त होता है । इस उपन्यास के बारे में डॉ. सुरेश सिन्हा लिखते है - " 'अंधेरे बंद कमरे' में आज की जिन्दगी की कड़वी छटपटाहट हैं सभी अपने अपने रास्तों को खोजने के लिए तथा गंतव्य स्थान पर पहुँचने लिए विकल दृष्टिगत होते हैं ।"[12] इस उपन्यास के पात्रों पर प्रकाश डालते हुए विजय मोहन सिंह लिखते हैं - " 'अंधेरे बंद कमरे' के पात्र अतीत या भविष्य में जीवित हैं - वर्तमान में नहीं ।"[13]

विवेच्य उपन्यास के विवेचन के उपरांत निष्कर्षतः स्पष्ट है कि 'अंधेरे बंद कमरे' का मूल विषय दिल्ली जैसे महानगर में उच्च मध्यवर्गीय लोगों के सड़ते हुए सामाजिक बंधनों का और साथ ही बनते बिगड़ते स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण है । हरबंस जैसा आदमी अपनी पत्नी को आधुनिक बनाता है लेकिन उसी कारण दोनों के दाम्पत्य जीवन में तनाव बढ़ता जाता है । साथ ही इस उपन्यास में दिल्ली जैसे महानगर में आर्थिक विषमता के कारण

मध्यवर्गीय लोगों की हालत किस प्रकार बिगड़ती है और आर्थिक विषमता का सामना करने के लिए मध्यवर्गीय लोग किस प्रकार छटपटाते या प्रयत्न करते हैं इसी का चित्रण किया है । कभी - कभी इसी कारण सफल दाम्पत्य जीवन में बिखराव तथा तनाव भी आता है या दोनों पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन किस प्रकार दुःखद बनता है, यह हरबंस और नीलिमा के द्वारा दिखाया है । हरबंस जैसा आधुनिकता का जोश भरा आदमी अपनी पत्नी को आधुनिक जीवन जी ने के लिए प्रोत्साहित करता है । परंतु जब पत्नी आधुनिकता के जोश में उससे भी आगे बढ़ जाती है । तब दोनों में झगड़ा शुरू हो जाता है । इसी कारण उन दोनों पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन सुख की अपेक्षा दुःखमय बन जाता है ।

2.2 न आने वाला कल -

यह मोहन राकेश जी का सन् 1968 में प्रकाशित दूसरा उपन्यास है । यह उपन्यास बाकी दो उपन्यासों की तुलना में छोटा उपन्यास है । यह उपन्यास सात शीर्षकों में विभाजित हैं - (1) त्यागपत्र, (2) डर, (3) कुरसी, (4) सहयोगी, (5) नाटक, (6) सड़क और (7) दरवाजे आदि । राकेश जी ने इस उपन्यास में उन तमाम लोगों की अभावग्रस्त जिंदगी को रेखांकित किया है जो फादर बर्टन स्कूल के दमघोटू वातावरण में जी रहे हैं । इस उपन्यास के सभी पात्र आने वाले कल की तलाश में जिंदा रहने की कामना करते हैं । इस उपन्यास का नायक मनोज सक्सेना है जो सत्तर साल पुराने फादर बर्टन स्कूल में हिंदी का अध्यापक है । इस उपन्यास की विषय वस्तु उसके अलग - अलग शीर्षकों के अनुसार इस प्रकार है .....

2.2.1 त्यागपत्र -

उपन्यास के शुरू में ही मनोज सक्सेना अचानक स्कूल से त्यागपत्र देने का निश्चय करता है । सहयोगियों को यह बात सच नहीं लग रही थी । इस बारे में मनोज कहता है -"त्यागपत्र देने का निश्चय मैंने अचानक ही किया था । उसी तरह जैसे एक दिन अचानक शादी करने का निश्चय कर लिया था । मगर स्कूल में किसी को इस पर विश्वास नहीं था ।"[14] छः हजार नौ सौ फुट की ऊँचाई और ठंड़ी की ऋतु होते हुए भी मानसिक तनाव के कारण नसों में आग का तपना, होटों पर पपड़ियाँ जमना, साँस घुटना आदि बाते उसके लिए सामान्य हुई थीं । साथ - ही - साथ अन्य कई कारण थे कि उन्होंने त्यागपत्र देने का विचार अनेक बार किया था ।

परंतु शोभा के होने के कारण उस विचार को छोड़ देता था। शोभा भी त्यागपत्र के इस खेल को समझती है और कहती है - "मुझे पता था तुम यही चाहोगे। छ: महिने साथ रहकर इतना तो मैं तुम्हें जान ही गई हूं।"[15]

मनोज ने रविवार के दिन सोने से पहले त्यागपत्र लिखा था। उसे रविवार को भी पूरी छुट्टी नहीं मिलती थी। इसलिए शाम के चार बजे ही वह त्रिशूली से लौटा था। वह बहुत थका हुआ था। चेपल जाने तथा कापियाँ जाँचने में उसे चिढ़ थी लेकिन हेड्मास्टर की टीका -टिप्पणी से बचने के लिए वह चेपल चला जाता है।

दूसरी ओर मनोज के सामने अपनी पत्नी शोभा का पूर्व जीवन वृत्तांत आता है। वह अपनी पत्नी को अपने मन में ही कई बार पत्र लिख चुका था। परंतु उन्हें कागज पर नहीं उतार पाया था। शोभा का मनोज के साथ यह पुनर्विवाह होते हुए भी वह अपनी पहली शादी जैसा बर्ताव करती थी और मनोज के घर में एक नई शुरुआत की कोशिश में लगी थी। उसका यह बर्ताव देख मनोज कहता है - "उसने मेरे घर में आकर एक नई शुरुआत की कोशिश की थी, पर वह शुरुआत सिर्फ उसके अपने लिए थी। उस शुरुआत में मुझे उसके लिए वहीं होना चाहिए था जो कि वह दूसरा था जिसकी वह सात साल आदी रही थी।"[16] परंतु मनोज को लगता था की वह पत्नी के नहीं, किसी दूसरे के घर में वह एक बेतुके मेहमान की तरह टिका है। इसलिए वह उससे अलग होने की चाह रखता है।

एक दिन स्कूल में चाय की पार्टी होने के कारण मनोज वहाँ रुकना आवश्यक मानता है। इसकी पूर्व सूचना वह शोभा को देता है। उसे अपने साथ पार्टी में चलने के लिए कहता है। तब वह इन्कार करती है। मनोज को पार्टी में देर होती है तब दोनों में झगड़ा होता है। तब शोभा अपने पिताजी के पास खुरजा जाना चाहती है। पिताजी शोभा की शादी मनोज के साथ करने के पक्ष में नहीं थे। शोभा खुरजा चली जाती है और वहाँ से मनोज को पत्र लिखती है - "बाऊजी तुमसे मिलने और बातें करने के लिए काफी उत्सुक हैं। तुम्हें कभी स्कूल से तीन-चार दिन की छुट्टी हो और तुम्हारा मन हो, तो चाहे चले आना।"[17] लेकिन मनोज इस पत्र का उत्तर नहीं लिख पाता। पत्र का उत्तर लिखने से पहले वह सिगरेट लाने बाहर चला जाता है और बाहर ही नाल पुल की मुंडेर पर बैठता है। तब वहाँ चेरी और उसकी पत्नी लारा भी घूमने आते हैं। चेरी लारा के प्रति अपनी वफादारी को प्रकट करते हुए मनोज से कहता है - "तुम अकेले घूमने निकल पड़ते हो, शरम नहीं आती।" साथ ही वह आगे यह भी कहता है कि पादरी बेन्सन का सर्मन हजम करने के लिए घूमने निकलना ही पड़ता है। कुछ समय बीतने पर

मनोज अपने कमरे पर चला जाता है । वहाँ भी वह पुन: दहशत का अनुभव करता है । वह सोचता है कि शोभा का त्यागपत्र से क्या संबंध है ? उसके मन में आत्महत्या के विचार भी आते हैं । त्यागपत्र देने के बाद जो बेकारी आयेगी उसको लेकर भी उसके मन विचार आते हैं । मगर वह किसी भी समस्या का हल नहीं कर सकता । बाद में वह शोभा को पत्र लिखने का प्रयत्न करता है । परंतु तनाव के कारण उस पत्र को बीच में ही छोड़ देता है और बर्टन स्कूल के हेडमास्टर को त्यागपत्र लिखना शुरु करता है । यहाँ उपन्यास का पहला शीर्षक समाप्त होता है ।

2.2.2 डर -

मनोज अपना त्यागपत्र मि. व्हिसलर के टेबुल पर कक्षाएँ शुरु होने से पहले ही रख आया था । वह चाहता था कि किसी को भी इसका पता न चले । परंतु 'टी ब्रेक' के समय कुछ लोगों को इसका पता लगता है । उसी समय कुछ लोग आपस में बातें करते हैं तो कुछ लोग उसके साथ बातें करना चाहते हैं । बुधवानी मनोज के साथ बातें करते - करते कहता है कि तुम हेड से मिल लेना - "हेड सचमुच तुमसे तुम्हारी बात जानना और समझना चाहते हैं ।" [18] वह आगे यह भी कहता है कि सीनीयर हिंदी मास्टर की जो खाली जगह है, उसके लिए तुम्हारा नाम बोर्ड के सामने रखना चाहते हैं और तुम पहले आदमी हो जिन्होंने अपनी तरफ से त्यागपत्र दिया है ।

'कामन रुम' की घंटी बजने के बाद 'कामन रुम' खाली हो जाता है । 'कामन रुम' से बाहर जाते समय पार्कर मनोज से कहता है कि तुम्हारी क्लास नहीं है ? उसकी पत्नी मिसेज पार्कर भी अपनी कहानी उसे सुनाती है । त्यागपत्र पर दोनों में चर्चा होती है और थोड़ी चर्चा करने के बाद वह चली जाती है और वह 'कामन रुम' में अकेला ही खड़ा रहता है । वह अकेले ही सोचने लगता है कि मैंने त्यागपत्र क्यों दिया ? यह सवाल उसे उसके अंदर से भी पार्कर और बुधवानी पूछ रहे थे । उन्हें जवाब देना भी वह टाल रहा है । उसके बाद गिरधारीलाल भी उसे समझाने की कोशिश करता है । इस प्रकार इस दूसरे शीर्षके अंतर्गत मनोज के मन में त्यागपत्र के कारण खड़ी अनेक शंकाओं एवं कुशंकाओं की ध्वनि परिवेश में गूँजने लगती है तथा वातावरण में डर छाने लगता है ।

2.2.3 कुरसी -

एक-डेढ़ घण्टे बरफ गिरने के बाद सारा वातावरण सफेद हो गया था । 'क्लास' लेने के बाद मनोज कामन रुम में आता है तो उसकी मुलाकात मिसेस जेन व्हिसलर से होती है । जेन उसे देखने के बाद कहती

है - "मैं नहीं जानती थी कि तुम इतने खतरनाक आदमी हो।"[19] उसके त्यागपत्र का झटका लगा है आदि बातें कहती है। कुछ देर बाद 'कामन रूम' में अन्य लोग भी आते हैं और वह उनके साथ बातें करती हैं। इस तरह 'लंच' की घण्टी बजने तक सारा जमाव उसी के आसपास रहा।

'लंच शुरू हो जाता है। मिसेस व्हिसलर उस समय भी प्रसन्नता से बात कर रहीं थी। वहाँ का सारा माहौल आपस में बातें करने में रस ले रहा था। थोड़ी देर बाद वहाँ कोहली के वैवाहिक जीवन को लेकर गिरधारीलाल और मनोज के बीच चर्चा चलती है। उसी समय गिरधारीलाल, कोहली का एक खत मनोज को दिखाता है। उसमें लिखा था कि - "मेरी पत्नी गुजर गई हैं। पर मैं दूसरी शादी कर आ रहा हूँ। मेरा फॅमिली क्वार्टर दूसरे को न दिया जाये। इसके बाद मनोज 'हेडमास्टर' के कमरे में चला जाता है। वहाँ पर भी दोनों में त्यागपत्र पर चर्चा चलती है। तब मनोज को भूतकाल की याद आती है। 'हेडमास्टर' व्हिसलर मनोज का त्यागपत्र मंजूर करता है। त्यागपत्र मंजूर करने से पहले वह उसे अनेक व्यक्तिगत प्रश्न पूछता है। वह यह भी पूछता है कि तुम्हारे त्यागपत्र का कारण क्या है? तुमने अपनी पत्नी से राय ले ली है? यह मेरा अपना व्यक्तिगत प्रश्न है कहकर मनोज उसे टाल देता है। व्हिसलर आगे पूछता है कि तुम्हारा वैवाहिक जीवन तो अच्छा है न? तब मनोज कहता है कि इसका मेरे त्यागपत्र से क्या संबंध हैं? मनोज की बातें सुनकर व्हिसलर अपनी गलतफहमी प्रकट करता है। व्हिसलर की इस टिप्पणीपर मनोज कहता है कि मैंने अपनी पत्नी को भी कभी टिप्पणी करने का अधिकार नहीं दिया। मनोज व्हिसलर के कमरे से बाहर निकलता है और 'कामन रूम' में चला जाता है। वहाँ मिसेस ज्याक्रे और एल्बर्ट क्राऊन दोनों बातें कर रहें थे। मनोज को देख दोनों भी चुप हो जाते हैं यहाँ उपन्यास का तीसरा खंड समाप्त हो जाता है।

2.2.4 सहयोगी -

लैरी शाम को मनोज को पार्टी देना चाहता है। परंतु इस आयोजन का पता मनोज को नहीं था। लैरी ने तो अपने यहाँ सिर्फ पीने के लिए आने की दावत दी थी। मनोज चला जाता है। वहाँ वह लैरी से बातचीत करता है। तब लैरी कहता है कि - "हम लोगों को मिलकर हेडमास्टर के खिलाफ अपना मोर्चा बना लेना चाहिए।"[20] तब मनोज इन्कार करते हुए कहता है कि मुझे तो नौकरी में दिलचस्पी नहीं है। उसी समय मनोज को पता चलता है कि उसके त्यागपत्र की बात जेम्स ने सारे स्कूल में की थी। चेरी भी वहाँ उपस्थित था। लेकिन वह खामोश था। तब मनोज को मालूम होता है कि टोनी व्हिसलर को हटाने के लिए चेरी और लैरी उनका सहयोग लेना

चाहते हैं । साथ ही उन दोनों को यह भी डर था कि टोनी व्हिसलर की खाली जगह मिसेज ज्याफ्रे ले लेगी । जो "बीस साल तक एक राजकुमारी की 'गवर्नेस' रही हैं"[21] और वह यह जगह एल्बर्ट को देना चाहती हैं ।

कुछ देर बाद लैरी गुसलखाने की ओर चला जाता हैं । तब चेरी उसकी निंदा करता है और अपना स्वार्थ प्रकट करता है । यह दोनों सहयोगी एक-दूसरे की निंदा करते हैं । यह कैसे सहयोगी हैं ? थोड़ी देर बाद लैरी वापस आता है उसी समय चेरी शांत हो जाता है । उसी वक्त वे मिसेस दारूवाला की चर्चा करते हैं । चेरी अब उठता है और किसी दिन बातें करने का सुझाव देता है । तब तीनों वहाँ से निकलते हैं और बातें करते-करते चले जाते हैं ।

2.2.5 नाटक -

मनोज जिमी के साथ उसकी स्टडी में चला जाता है । वहाँ प्रीफेक्ट जसवंत को खड़े देख उसे आश्चर्य लगता है । जसवंत को जिमी ने सात बेंत मारे परंतु उसने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की । जिमी घर के अंदर चला जाता है और मनोज स्टडी रूम में ही रूकता है । जिमी वापस लौटने तक रजिस्टर में हस्ताक्षर करता है । थोड़ी देर बाद जिमी वापस आता है । वह मिलनसार आदमी होने के कारण दोनों स्टडी में बातें करते हैं ।

एक श्याम स्कूल में नाटक का आयोजन किया था । वह जिमी ने ही आयोजित किया था । इसमें स्कूली व्यवस्था पर कुछ टीका - टिप्पणी थी । जिमी की पत्नी रोज इस नाटक में अपने मन के विरूद्ध जिमी के निर्देशन में काम करती है । मनोज भी नाटक देखने जाता है । एक के बाद एक ऐसे तीन अंक समाप्त होते हैं । परंतु यह नाटक मिस्टर व्हिसलर को पसंद नहीं आता । नाटक समाप्त होने के बाद सब लोग डिनर के लिए इकट्ठा होते हैं । वहाँ पर नाटक की चर्चा रंग लाती है । डिनर के समय मिसेस ज्याफ्रे और रोज के बीच झगड़ा होता है । तब रोज की पीने की आदत की मिसेस ज्याफ्रे शिकायत करती है । तब रोज भी चुप नहीं बैठती वह कहती है कि हाँ मैं पीकर आई हूँ । इस प्रकार वह अपने एक ही वक्तव्य द्वारा सारे विरोधियों का मुँह बंद कर देती हैं ।

उधर नाटक पर चर्चा चल रही थी । और इधर बॉनी मनोज की ओर देख रही थी । बॉनी मनोज से हिंदी पढ़ने की बात कहती हैं । चलते-चलते वह प्रीफेक्ट जसवंत की बात कहती है । जिसे मिस हाल ने अपने जाल में फसाया था । जब एक रात उसे अपने क्वार्टर का दरवाजा खटखटाते देख लिया तब वह उसकी शिकायत अपने हेड के पास करती है । तब उसे निकाला जाता परंतु पनिशमेंट देकर नहीं निकाला गया । तब भी मनोज के मन में त्यागपत्र का भय चर्चा, शंका और कुशंका का कारण बना हुआ था ।

2.2.6 सड़क -

मनोज की ड्यूटी का अगला दिन शनिवार था । यह उसकी ड्यूटी का अंतिम दिन था । उसके बाद छुट्टियाँ शुरू होने तक सिर्फ रिपोर्ट भरने का काम ही बाकी रह जाता था जो महत्त्वपूर्ण नहीं था । तब तक मनोज को शोभा का दूसरा पत्र आता हैं । पत्र में शोभा ने मनोज के पत्र के उत्तर न देने की बात की शिकायत की थी । पर मनोज तर्क देने की बात सोचता है लेकिन उत्तर नहीं दे सकता । रात आठ बजे उसनें बॉनी को होटल में मिलने के लिए बुलाया था । वह उससे मिलने की बात सोचता है । बॉनी पहाड़ी स्कूल में टीचर है । वह अविवाहित और युवा है । उसे जवानी के अनुरूप हल्का - फुल्का जीना पसंद नहीं है । वह आज की अंतिम घण्टी बजने की प्रतीक्षा कर रहा है । आखिर साढ़े सात बजे खाना शुरू होता है - तब उसे अपने अधिकार की याद आती है । तब वह 'ग्रेस' शब्द कहता है तो सारा हॉल खाली हो जाता है । तब उसे लगता है कि आज उसने बदला ले लिया है कि उसे भी कितनी बार भूखा उठना पड़ा था ।

बाद में उसकी मुलाकात मिसेस दारूवाला से होती है । उनके साथ बातचीत चलती है तब वह शोभा के बारें में पूछताछ करती है । तब मनोज के चेहरे की नसें फिर कस जाती हैं । मनोज वहाँ से चला जाता हैं । उसे 8.30 को बॉनी से मिलना था लेकिन अब तक 8.25 हो चुके थे । उधर बॉनी ने कहा था कि 'मैं इंतजार नहीं करूँगी ।' मनोज तो सुबह से सोच रहा था कि वह रात आठ बजे से अपने को स्वतंत्र महसूस करेगा लेकिन बॉनी से मिलने का भार अब भी उसके ऊपर था । रास्ते से चलते चलते शोभा के पत्र का उत्तर देने का विचार भी उसके मन में आता है । स्कूल के लोगों से छिपकर वह होटल सेवाय में बॉनी से मिलता हैं । वह उसकी राह देख रही थी । दोनों में बातें होती हैं और वे दोनों बाहर घूमने निकलना चाहते हैं । वे बिल चुका करके त्रिशूली की तरफ चलते हैं ।

रात 9.15 बजे वे त्रिशूली की तरफ बढ़ते हैं । चलते-चलते मनोज उसका हाथ पकड़ता है और कभी कभार चूम कर छोड़ देता है । दोनों बातें करते - करते चल रहे थे तब बात पत्नी शोभा पर आकर अटक जाती है । उस समय उनमें दूसरी भी बातें चल रही थीं । तब तक एक जीप चली जाती हैं । दोनों घबराकर अलिंगन बद्ध हो जाते है । चलते-चलते वे हवाघर पहुँचते हैं । वहाँ बैठकर वे चर्चा करते हैं । बॉनी कहती है कि यहाँ मैंने प्रत्येक को नकली चेहरें ओढें देखा है । वह आगे अपने जीवन क बारें में कहती है - ''जहाँ तक शरीर की नैतिकता का संबंध हैं, उसे लेकर मेरे मन में कभी कोई कुण्ठा नहीं रहीं । जब सत्रह साल की थी तभी से मैं तुम्हारे सामने यह भी

स्वीकार करती हूँ कि कई एक लोगों के साथ मेरा शारीरिक संबंध रहा ही है, हालांकि हर एक के साथ एक-सा नहीं ।"[22] बॉनी अपना परिचय करवाती है और मनोज चुपचाप सुनता रहता है । वह अपने भीतर जिन विकृतियों को पाती है, उसका कारण वह अकेलापन और उसकी छटपटाहट को मानती है । शोभा को तार देकर अपने पास बुलाने की राय भी वह मनोज को देती है । क्योंकि वह यहाँ आकर सब सामान या चीजों को समेट सकेगी । परंतु मनोज को यह सब चीजें पसंद नहीं थीं । क्योंकि वह अब एक लंबी यात्रा करना चाहता था । वहाँ से निकलकर वे दोनों वापस लौटने लगते हैं । जहाँ पगडण्डी सड़क से मिलती थी वहाँ पहुँचने से पहले बॉनी मनोज की बाँह पकड़कर पूछती है कि " मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे क्वार्टर में चलूँ ? कुछ देर के लिए ?"[23] तब मनोज कहता है - "मन हो तो चलो ।" अंत में दोनों एक - दूसरे को 'गुडनाइट' कहकर अलग होते हैं । फिर घर की पगडंडी और कल की चिंता में मनोज का दिमाग जकड़ जाता है ।

2.2.7 दरवाजे -

मनोज की यह आखरी श्याम थी । उसका सारा सामान कमरे में जहाँ था वहीं पड़ा हुआ था । वह शोभा का पत्र भी फाईल में नहीं लगा पाया । अल्बम में तस्वीरें सजा नहीं पाया । अपने साथ कुछ जरूरी किताबें और जरूरी सामान लेकर बाकी सब वहीं छोड़ देने का वह निर्णय लेता हैं ।

उसी समय पास के कमरे में कोहली और शारदा का झगड़ा शुरू होता है । वह अपनी पत्नी शारदा को पीटता है । उन दोनों का झगड़ा रात में होता था इसी कारण दिन में कोहली को नींद आती थी । तब बाकी लोग उसका मजाक करते हुए कहते थे - "क्या बात है कोहली ? नई शादी की हैं, इसका यह मतलब तो नहीं कि रात-रात भर सोओ नहीं । अगर इतना ही प्यार है तो महिने, दो महिने की छुट्टी लेकर उसे कहीं बाहर ले जाओ ।"[24] मगर कोहली तो अपनी दूसरी शादी करने के बाद बहुत परेशान था । वह मानसिक रूप से टूटता जा रहा था । इस प्रकार एक ओर झगड़ा चल रहा था तो दूसरी ओर मनोज शोभा के बारे में विचार - विमर्श कर रहा था । तब वह शोभा के पास जाने की बात सोचता है ।

कुछ समय बितने के बाद शारदा मनोज के दरवाजे पर दस्तक देती है । वहाँ दोनों में सामान को लेकर चर्चा चलती है । आगे शारदा अपनी कहानी मनोज को बताती है । इससे मनोज को ज्ञात होता है कि शारदा के माँ बाप की गरीबी के कारण ही उसे कोहली के साथ शादी करनी पड़ी थी । शारदा शोभा की प्रशंसा करती है । तब

मनोज चिंतित होता है कि उसे उसके कमरे में वापस कैसे भेजें ? अंत में कोहली अब आता ही होगा, मुझे जल्दी से काम पूरा करके कुछ लोगों से मिलने के लिए जाना है आदि कहकर वह उसे टालता है ।

मनोज सुबह उठता है । अब भी वहीं खालीपन था । सामान की समस्या हल होने के बाद उसे काफी हल्का महसूस हुआ । स्कूल चलते समय सड़क के तीसरे मोड़पर उसकी भेंट काशनी से हुई, जो फकिरा की पत्नी थी । मनोज उसे बतलाता है कि - "फकिरा को तीन बजे से पहले भेजना, कुछ चीजें हैं, उन्हें वह ले जाय ।" परंतु काशनी स्वयं ही वहाँ सामान लेने आती है और सामान लेकर जाने लगती है । तब मनोज उसे अंदर बुलाता है । उसे अपनी बाहों में लेता है, उसके होठों, गालों और गरदन को चूमता है । फिर भी वह शांत रहती है। बाद में मनोज उसके साथ यौन संबंध करने का प्रयत्न करता है, तब काशनी 'मेरा एक छोटा आपरेशन हुआ था' कहकर अपने आपको मुक्त करती है और सामान ले जाती है । अब मनोज भी बस अड्डे पर पहुँचता है और अपना टिकट लेता है । परंतु उसकी 1751 नंबर की बस का इंजन रास्ते में खराब होने के कारण नहीं आ पाई थी । यहाँ उपन्यास समाप्त होता है ।

'न आने वाला कल' इस उपन्यास के सभी पात्र अस्तित्व की चिंता में बेचैनी और घुटन का अनुभव कर रहे हैं । चंद्रकांत बांदिवडेकर के अनुसार "राकेश की कलात्मक उत्कृष्टता और जीवन दर्शन की पैनी पैठ की दृष्टि से 'न आने वाला कल' अधिक शक्तिशाली और अधिक प्रगल्भ रचना है ।"[25]

विवेच्य उपन्यास के विवेचन के उपरांत निष्कर्षत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास का मूल विषय स्कूली जिंदगी पर आधारित है । सत्तर साल पुराने फादर बर्टन स्कूल के दमघोंटू वातावरण में जी रहे सभी अभावग्रस्त लोगों की जिंदगी को लेखक ने ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया हैं । इस उपन्यास में लेखक ने वर्तमान कालीन शिक्षा व्यवस्थापर तीखा व्यंग किया हैं । यह उपन्यास स्कूली जिंदगी पर आधारित होकर भी मध्यवर्गिय चेतना को ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है । साथ ही उन लोगों के दांपत्य जीवन में तनाव के कारण किस प्रकार घुटन तथा बिखराव की नौबत आ चुकी है उसी का सही चित्रण किया हैं ।

'न आने वाला कल' उपन्यास में मध्यवर्गिय पात्रों का चित्रण हैं । इस उपन्यास के पात्र फादर बर्टन स्कूल के दमघोंटू वातावरण से ऊबे हैं । ये सभी लोग इस स्कूल के साथ-साथ अपने दांपत्य जीवन से भी इतने ऊब चुके हैं कि वे एक-दूसरे से अलग होना चाहते हैं । इसी कारण उपन्यास के सभी स्त्री - पुरुष या दम्पति यों को

एक-दूसरे से अलग रहने की चाह रखने की आदत सी लगी हुई है ऐसा दिखाई देता है । संक्षेप में उपन्यास में ज्यादातर दुःखद दाम्पत्य जीवन का चित्रण ही दिखाई देता हैं ।

2.3 अन्तराल -

'अन्तराल' प्रकाशन क्रम की दृष्टि से मोहन राकेश जी का तीसरा उपन्यास है । इसका प्रकाशन सन 1972 में हुआ था । 'अन्तराल' उपन्यास की विषय वस्तु अंतराल शीर्षक के तीन मुख्य खंडों में विभाजित है । अंतराल - 1, अंतराल - 2 और अंतराल - 3 के मध्य कई छोटे छोटे कथांश हैं । इस उपन्यास में स्त्री-पुरुष के संबंधों के बीच नित्य घटित जटिल से जटिल और सरल से सरल अनुभूतियों को यथार्थ रूप से प्रकट किया हैं । 'अंतराल' स्त्री और पुरूष के बीच के नामहीन संबंधों की कहानी है । 'अंतराल' में कस्बाती शहर का परिवेश और सामाजिक जीवन से टकराकर जी रहे लोगों की अपनी समस्याएँ हैं ।

उपन्यास की शुरूआत कुमार के आफिस के दृश्य से होती है । एअर कंडिशनिंग प्लाट के रूक जाते ही वह अपनी घड़ी में समय देखता है । अपने सामने रखे कागजों का पुलिंदा उठाकर ट्रे में डालता हैं । वह काफी थका हुआ था । वह आफिस से बाहर आकर एक बार फिर घड़ी देखता है । उसे श्यामा से टी सेंटर में 5.30 बजे मिलना है । वहाँ ज्यादा भीड़ न होने के कारण ही उसने वह जगह चुनी थी । वह लिफ्ट की सहायता न लेकर पैदल ही जी ने से उतरने लगता है । उतरते समय उसका सामना उसकी स्टेनो रूबी और स्वातंत्र पार्टी के नीलकांत से होता है । जो हर दूसरे तथा चौथे दिन उसके केबिन में आकर घंटा घंटा भर बैठता था । कुमार उससे विदा लेता है तब तक 5.22 हो चुके थे । तब टॅक्सी मिलने की संभावना कम दिखते ही वह पैदल ही टी सेंटर की ओर जाने लगता है ।

बाहर फूटपाथ पर आकर वह अनुभव करता है कि "शाम 'शाम' होती है और उसका अपना एक रंग, एक व्यक्तित्व होता है, यह बात इन कुछ सालों से भूलती सी जा रहीं थी ।" [26] उसके जीवन में केवल दो ही नाम रह गए थे - दिन और रात । उसका अर्थ उसके लिए सिर्फ केबिन के ट्यूब की रोशनी और सड़क के हांडों की रोशनी तक ही सीमित था । वह तेज ट्रॅफिक के जोखिम से गुजरकर, फ्लोरा की मूर्ति वाले घेरे को पार कर फूटपाथ पर आता है । परंतु इस समय उसका मन उसके पैरों के साथ नहीं है । वह टी सेंटर पहुँचने से पहले एकान्त में बैठना चाहता है । क्योंकि वह सोचता है कि तीन साल बाद आज वह श्यामा से मिल रहा था । फोन पर बातें करते समय

वह उसकी आवाज भी नहीं पहचान पाया था । फोन सुनते ही वह हड़बड़ा उठा था । अपनी हैरानी को दूर करने के लिए ही वह साढ़े पाँच बजे श्यामा को टी सेंटर में मिलने को कहता है । अपनी इसी हैरानी तथा उलझनों के दबाव के कारण वह एक गाड़ी के नीचे दब जाने से बच जाता है । वह टी सेंटर पहुँचता है ।

टी सेंटर में ज्यादा भीड़ थी । वहाँ कुमार श्यामा को ढूँढने लगता है । परंतु वहाँ श्यामा नहीं थी । टी सेंटर का बिल अदा कर वह टैक्सी से स्टेशन पहुँचता है । वह दौड़कर गाड़ी पकड़ता है । तब उसे पूर्व जीवन की याद आती है कि वह नित्यानंद कॉलेज में दर्शन विभाग का अध्यक्ष था । अपने एकाकीपन को दूर करने के लिए वह नित्य पार्टियों का आयोजन करता था । एक दिन मित्र सुभाष की शादी के उपलक्ष्य में पार्टी का आयोजन किया था । वहाँ कुमार सुभाष की पत्नी कमल के अतिरिक्त वह एक और सत्ताईस - अट्ठाईस साल की युवती को देखता है । उसका परिचय प्रो. मलहोत्रा करा देते हैं । वह प्रो. मलहोत्रा की साली श्यामा थी जो मंडी के एक हाईस्कूल में 'हेड मिस्ट्रेस' थी । वह फिलासफी में एम्. ए. करना चाहती है । प्रो. मलहोत्रा उसको मार्गदर्शन करने को कहते हैं । श्यामा को इस पार्टी में रुचि नहीं थी यह उसके चेहरे से स्पष्ट हुआ था । जब उसे गाने के लिए कहा जाता है तब उसका चेहरा एकाएक सुर्ख हो उठा ।

अगले दिन जब कुमार घर आता है तब श्यामा वहाँ पहले ही उपस्थित थी । तब श्यामा उसे अपनी क्लास की फीस के बारें में पूछती है । उसे फ़ीस की बात मैं प्रोफेसर मलहोत्रा से ही तय करूंगा । कहकर टाल देता है । शुरू के तीन चार दिन पढ़ने के लिए समय की बंदिश थी और वह सीरियस होकर पढ़ती थी । परंतु बाद में वह बंदिश ढ़ीली पड़ गई । तब बातों ही बातों में कुमार को पता चलता है कि श्यामा विधवा है । उसकी एक बच्ची है । उसकी सास और ननद की जिम्मेदारी भी उसे ही उठनी पड़ती है । वह कॉलेज में लेक्चरर बनने के लिए एम्. ए. करना चाहती थी । अब कुमार को उसके जीवन की जानकारी हररोज मिलती थी । उसे श्यामा से ज्ञात होता है कि प्रो. मलहोत्रा के विचार उसके प्रति अच्छे नहीं हैं । कुमार को श्यामा की दृष्टि में हीन सिद्ध करने के लिए वे कुमार और लता के प्रेम की गाथा सुनाते हैं । वह लता से प्रेम तथा अन्य कई बातों के कारण वह कस्वाती शहर छोडना चाहता था । श्यामा अब घरेलू मामलों पर भी चर्चा करती थी । श्यामा लोगों की टीका- टिप्पणी से परिचित होते हुए भी कुमार के साथ घूमने निकल पड़ती हैं ।

A
13657

गेट से बाहर निकलकर श्यामा खेतों की तरफ चलने लगती है । चलते समय ज्यों - ज्यों मकान पीछे छूट जा रहे थे त्यों - त्यों श्यामा की चाल में निश्चिंतता आती जा रही थी । आगे चलकर तारों को लाँघते समय श्यामा की साड़ी फट जाती है । तब वह कुमार को वापस बुलाती है । परंतु स्वयं ही फटी हुई साठी की गाँठ मारकर आगे पगडंडी पर बैठने लगती है । दोनों बातें करते करते चल रहे थे । चलते समय कुमार उसकी पीठ पर देखता है । वहाँ ब्लाउज की पीठ पर बूँदों की एक जाली सी बन गई थी । जिससे ब्रेसियर की पट्टी के ऊपर नीचे का हिस्सा पहले से ज्यादा पारदर्शक हो गया था । तब श्यामा कहती है कि मैं अपनी पंद्रह दिन की छुट्टी कैन्सिल कर रही हूँ जिसका कारण प्रो. मलहोत्रा है । उसी समय बारिश शुरू हो जाती है । बारिश में श्यामा सिर से पैर तक भीग जाती है ।

बांद्रा स्टेशन पर गाड़ी रूकते ही कुमार की विचार धारा भंग हो जाती है । गाड़ी रूकते ही वह भीड़ को पार करते हुए बस में दाखिल होता है । उसी बस में एक लड़की थी जो बहुत प्रयत्नों के बावजूद उससे टकरा जाती है । वह 'ग्लूकोज ग्लैक्सो' स्टाप पर उतरती है । कुमार अपने स्टॉप पर उतरकर घर न जाकर पहले ईरानी ढाबे में चला जाता हैं । वहाँ बारिश के कारण छत की टीन पर जोर की आवाजें होने लगी थीं । तब पुनः कुमार पूर्व विचारों में लीन हो जाता हैं । वह भीगी श्यामा के साथ पगडंडी पर जा रहा था । वहाँ उन दोनों के सिवा और कोई नहीं था । वहीं उन्हें खपरैल के नीचे चारपाई का सहारा मिल जाता हैं । वहीं पर श्यामा कुमार को प्रो. मलहोत्रा की अपने प्रति बुरी नजर की बात बताती हैं । तब कुमार भी उसे लता के बारे में बताता है । वह कहता है - "शारीरिक आकर्षण से हटकर एक और आकर्षण होता है, व्यक्तित्व का चुंबक-आकर्षण, जो शारीरिक आकर्षण से कहीं अधिक मन को खींचता है । उस आकर्षण का अनुभव मुझे पहली बार उसी को लेकर हुआ था ।" [27] वह आगे कहता है कि जब बाहर सेहन में किसी की साइकिल आकर रूकती थी, तो दिल की धड़कन बढ़ जाती थी । दरवाजा खुलते ही लता मुस्कुराती हुई अंदर आती और दरवाजा बंद होते ही आँखें मूँदकर बाँहे उसके कंधों पर रख देती । अपने समस्त शरीर को उसके आगे समर्पण करती, लेकिन केवल एक सीमा थी जहाँ आकर वह पीछे हटती थी । तब उसकी माँ ने उसका विरोध किया और लता न चाहते हुए भी उसकी शादी किसी सिविल इंजिनीयर से करा दी ।

ठंड के कारण श्यामा अपने में सिमटकर बैठी उसकी बातें सुन रही थी । बातें करते - करते कुमार श्यामा का मुँह अपनी तरफ करता है । श्यामा विरोध नहीं करती । उसी समय खपरैल का मालिक युवक सरदार जाट

वहाँ पहुँचता है । उसकी नजर श्यामा के शरीर पर टिकी है । जाट युवक उन्हें चाय पीने का आग्रह करता है और रोशनी के लिए लालटेन ले जाने को कहता है । परंतु वे दोनों सीधे चल पड़ते हैं । पीछे से उन्हें जाट युवक के गाने की आवाज सुनाई देती है । जाते समय श्यामा कहती है कि वह मलहोत्रा के घर नहीं ठहर सकती । बिजली के चमकते ही वह श्यामा के शरीर को देखता है जिससे उसके अंदर एक उन्माद भर जाता है और दोनों आलिंगन बद्ध हो जाते हैं । तब से अगले दोन दिन तक श्यामा के न आने के कारण वह मलहोत्रा के घर जाने का निश्चय करता है । समय काटने के लिए वह पुरानी चिट्ठियों की फाइलें लेकर बैठ जाता है । तभी थोड़ी देर बाद चाय लेकर श्यामा आती है । तब उसे पता चलता है कि श्यामा उसी दिन की गाड़ी से वापस जा रहीं है । जाने से पहले वह उसे मिलने के लिए आई थी । वह उसे देव के साथ बीते हुए दांपत्य जीवन के बारे में भी बताती है । वह कहती है - "उसका पति उससे खुश नहीं था । फिर भी वह कभी डाँटता नहीं था या कोई शिकायत भी नहीं करता था । उसकी इसी आदत के कारण श्यामा उसे मृत्यु के बाद भी क्षमा नहीं करती । थोड़ी देर बाद श्यामा की खामोशी का कारण क्या हैं ? यह कुमार पूछता है । इस प्रश्न का उत्तर देते हुए वह कहती है कि वह उस वक्त भी देव के साथ चल रही थी और सरदार जाट के घर की चारपाई को देखकर उसे कृष्णचन्दर की कहानी 'प्रीतो' याद आ रही थी । जिसमें प्रीतो पति को अपने प्रेमी का हत्यारा समझ पति पर कृपाण लेकर टूट पड़ती है । परंतु पति वही कृपाण छिनकर प्रीतो का सिर काट देता हैं । उसी समय कुमार को पता चलता है कि वह अपने पति के पश्चात अपनी सास और ननद का खर्चा वहन कर रही है ।

अब श्यामा जाने की आज्ञा माँगती है । तब कुमार उसे विदा देने के लिए उसके साथ स्टेशन जाना चाहता है परंतु वह मना करती है । उसे अगले स्टेशन पर पहुँचने को कहती है । तब कुमार दो घंटे पूर्व ही अगले स्टेशन पहुँचता है । गाड़ी आती है । तब कुमार श्यामा के साथ कुछ बातें करता है । श्यामा कहती है - "अगर सचमुच मैं कभी ऊबर सकी, अपने-आपसे, जिसकी कि मुझे आशा नहीं है, तो सबसे पहले मैं तुम्हारे पास आऊँगी ।"[28] कुमार आगे बताता है कि मुझे कहीं दूसरी नौकरी मिलेगी तो मैं वहाँ चला जाऊँगा । श्यामा को विदा कर वह रिक्शा लेकर घर पहुँचता है ।

श्यामा को टी सेंटर पहुँचने में अपनी बेबी के रोने की वजह से तथा उन्हों ने जो गाड़ी पकड़ी थी वह हर स्टेशन पर रूकती थी इसी कारण देर हो जाती हैं । वह टी सेंटर में पहुँचती हैं । परंतु वहाँ कुमार नहीं था । वह उसे

मिलने घर में झूठ कहकर आयी थी । उसने तब अपनी एक पुरानी छात्रा को मिलने और उसके घर ही खाना खाने की झूठ बात घर में बतायी थी । बारिश शुरू हुई थी । वह भीग जाती है । उसे बीते समय की याद आती हैं । वह कुमार को पत्र लिखना चाहती थी फिर भी लिख नहीं पाती । तब सारी झुंझलाहट अपनी बेटी पर उतारती थी । क्यों कि बेटी के रोने के कारण उसकी विचारधारा टूट जाती थी ।

श्यामा अब डायरी लिखना शुरू करती है । जिसमें वह लैंड स्लाईड का वर्णन करती है । फिर लेडी डाक्टर बत्रा की आत्महत्या के बारे में लिखती है । वह मंडी में तीन दिन से लगातार होती वर्षा, बादलों की गर्जना आदि सभी का वर्णन करती है । वर्षा के समय उसे अकेला पण ज्यादा घेर लेता था । उसी समय किसी दंपति को देखकर उसे अपने पति देव की याद आती थी । श्यामा कुमार को तीन बार पत्र लिखती है और फाड़ डालती है । अंत में वह कुमार को एक और खत लिखती है जिसे अंतिम रूप देने में उसे दो दिन लगे थे । उस पत्र में उसने अपने ही स्कूल की अध्यापिका रंजू के बारे में लिखा था । साथ ही कुमार को रंजू को देखने आने का निमंत्रण भी दिया था ।

श्यामा अब नैरीमन पाइंट पहुँच चुकी है । वह वहाँ एक डगमगाती नाव को देखती है । उसके होंठ खुल जाते हैं और साँस तेज होती हैं । परतु पानी की एक बूँद गिरते ही उसकी विचार धार भंग हो जाती है । मैरीन ड्राइव जाकर वह बस पकड़ती है । आगे अंधेरी स्टेशन पर उतर वह घर की ओर चलने लगती है । 'घर' शब्द से ही उसे घुटन महसूस होती थी । उसके घर की बीजी और सीमा उसके लिए अजनबी थी जिन्हे वह पतिके जीवित रहते हुए भी अपना न सकी थी । अब सिर्फ बिटिया के कारण ही उनसे संबंध बना हुआ था । परंतु बेबी भी अब उन दोनों जैसी ही लगती थी । वह विचारों में लीन घर पहुँचती है । उस समय घर पर कोई नहीं था । तब खुशी से पलंग पर लेट जाती है । वह पुनः पुरानी यादों में खो जाती है । वह शनिवार के दिन सिंदूरी को अपने घर की सफाई करने के लिए कहती है । मेहमानो के बारे में पूछताछ के लिए कहती है । सिंदूरी के मेहमानों के बारे में पूछताछ करने पर श्यामा बताती है कि हमारे उनके दोस्त कुल्लू का दशहरा देखने आ रहे हैं ।

श्यामा को टब में स्नान करना अच्छा लगता था । वह अपने सुंदर शरीर को भी स्नान करते समय देखती है । आईने के सामने अपने शरीर को देखना चाहती है परंतु उसका सामना नहीं कर पाती । उसे सहलियाँ मिलने आती हैं । तब वह सहलियाँ रंजू और रामेश्वरी मेहता को सिर-दर्द का बहाना बनाकर वापस भेजना चाहती थी । परंतु रामेश्वरी लेडी डॉ. बत्रा के आत्महत्या की बात करती है । श्यामा दुवारा बतायी गई बात कि - "उसके

दोस्त हैं जो यात्रा में यहाँ भी रूकेंगे," को सुनकर रंजू और रामेश्वरी की उत्सुकता बढ़ती है । उन दोनों को विदा करते ही गर्ल्स गाईड्स इन्चार्ज मिसज सोहनसिंह आ पहुँचती हैं । वह उसे भी विदा करती है । उसके बाद मैनेजिंग कमिटी के सदस्य आते हैं । इस प्रकार न चाहते हुए भी एक के बाद एक अनेक लोग आ रहे थे ।

श्यामा कुमार के आने की बात सोच सामाजिक मानस को याद कर घबराती है । वह सिंदूरी को जाने के लिए कहती है । सिंदूरी के चले जाने पर वह और श्यामा दोनों ही घर में अकेले थी । वह कुमार की प्रतिक्षा करती है । वह समाज का सामना करने का निर्णय भी लेती है । कुमार के आगमन की कल्पना में वह इतनी डूब जाती है कि उसके साथ काल्पनिक बातें भी करने लगती है । वह विचारों में लीन अपने आपको लकड़ी की रोलिंग पर पाती है । वह डायरी लिखने तथा गीता पढ़ने का प्रयास करती है । परंतु वह प्रयास भी सफल नहीं होता । बेबी ने जब श्यामा को हिलाया तब वह जाग गई । उसने बेबी को खूब चुमा । परंतु खाना खाते समय बेबी का बर्ताव देख उसे गुस्सा आता है । वह पलंग पर लेट जाती है ।

श्यामा बंबई में अपने और बीजी की साँझेदारी में एक प्लेंट खरीद लेती है । उस प्लेंट के लिए पैसे का इंतजाम वह पूना का घर बेच, बैंक बचत, प्राविडेंट फंड़ तथा मलहोत्रा से कर्ज लेकर करती है । सीमा अब बंबई में टेलिफोन ऑपरेटर की नौकरी करने लगी । श्यामा को बीते हुए दिन याद आते हैं । उसे विवाह का दिन याद आता है । साथ ही साथ प्रिंसिपल गोपाल जी के साथ उसका नाम जुड़ना उसे अच्छा लगता है । एक रात सीमा पीकर आती है तो श्यामा को गुस्सा आता है । फिर भी वह चुपचाप लेटी रहती है । वह रात श्यामा ने जागते और सपना देखते देखते ही बितायी, मानों दोनों स्थितियों के बीच कोई अन्तराल नहीं था ।

श्यामा के परिवार में आर्थिक स्थिति के कारण ही तीनों एक घर में खाना खाती हैं । श्यामा अब बम्बई रहने आयी थी परंतु सीमा और बीजी के व्यवहार को देख उसे पछतावा होता है । इसी बीच उसने कुमार को एक पत्र लिखा था परंतु पता बदलने के कारण वह पत्र वापस आता हैं । बेबी को स्कूल में दाखिल करने की बात चलती है । तब पैसे की बात आते ही सीमा उत्तेजित होकर बातें करती है । तब श्यामा और सीमा के बीच झगड़े की नौबत आती है - "तुम्हारा जो पैसा इस प्लैट पर लगा है वह मैं थोड़ा थोड़ा करके अपनी नौकरी से चुका सकती हूँ । और वह तुम्हें पसंद न हो तो प्लैट बेचा भी जा सकता है ।"[29] वह आगे यह भी कहती है कि - "हम लोग एक-दूसरी से डरती दबती हुई यहाँ रहे यह बात निभने वाली नहीं हैं ।" [30] सीमा चली जाती है ।

दिल का अधिकांश समय श्यामा ने घर से बाहर ही बिताया । वह कुमार को फोन करना चाहती है । परंतु कुमार का नंबर नहीं मिलता । घर पहुँचने तक सीमा घर से आ चुकी थी । श्यामा देव के बारे में सोचती है । वह चाहती है कि एक दिन के लिए देव जिंदा हो जाए तो वह उससे कुछ बातें करेगी । रात को सीमा के लौटने तक वह उसकी राह देखती है । जब वह आती है तब उसके सामने योजना पूर्वक अपने ढंग से जीवन जी ने की बात रखती है । तब सीमा बात को टालना चाहती है । उसी समय श्यामा के दिमाग मे एक भंवर सा घूम जाता है । उसके केंद्र में सीमा का चेहरा था और अन्य चेहेरे उसके इर्द - गिर्द मंडराते हुए एक ही बात कर रहे थे - 'यू आर स्टिंग ।' जब श्यामा उस भंवर से मुक्त होती है, तब वह देखती है कि, उसने जो थप्पड़ मारा था वह सीमा चेहेरेपर मारा था । तब वह सीमा से माँफी माँगती है । सीमा भी उत्तेजित होकर अलमारी से श्यामा का कुमार को लिखा पत्र निकालकर उसके आगे फेंक देती है । तब श्यामा को कमरे की हर चीज हिलती हुई नजर आई । वह कहना चाह रही थी कि किसी का पत्र पढ़ना कमीनी हरकत है । उसी समय उसने दरवाजे के पास से हटती छाया देखी वहाँ बीजी थी । वहाँ बीजी कब से खड़ी थी यह अनुमान वही नहीं लगा सकी ।

कुमार अपने को डे - लाइट की ट्यूब रोशनी में एनेमल फ्लास्क में बंद सा महसूस कर रहा था । कुछ भी विचार उसकी पकड़ में नही आ रहे थे । वह विचार नहीं कुछ और था । वह अपनी स्टेनो रूबी को डिक्टेशन देता है और विचारोंमं खो जाता है । तब अचानक श्यामा उसके सामने आ जाती है । तब रूबी को डिक्टेशन देना बंद कर कुमार और श्यामा टी सेंटर पहुँचते हैं । वहाँ पर चाय से संबंधीत और कुछ घरेलू बाते करते हैं । तब श्यामा खरीदे हुए प्लैट की जानकारी देती हैं । बातों ही बातों में कुमार बताता है कि दो पूर्व मैंने शादी की थी । इस तरह बातें करते हुए वह ट्रेन का टिकट लेने गया । दोनों चलती गाड़ी में चढे । बांद्रा पहुँचते ही वे दोनो नीचे उतरते हैं और कुमार के कमरे पर चले जाते हैं । कुमार के कमरे की अव्यवस्था देख वह आश्चर्यचकित हो जाती है । श्यामा चाय बनाती है और रोटी काटकर स्लाइस भी स्वयं बनाती है । दोनों चाय पीते हैं और स्लाईस खाते हैं ।

दोनों में कुमार के विवाह के साथ - साथ उसका पत्नी के साथ न निभने के कारणों पर भी चर्चा चलती है । आसपास के वातावरण पर भी चर्चा चलती है । तब तक श्यामा पुन: चाय बनाती हैं । चाय पीते ही वह जाना चाहती है । जाने के बाद कुमार फ़ोन करने के लिए कहता है । मगर वह उसे जाने नहीं देता । वह श्यामा को अपनी बाँहो में भरकर चूमता है ।

कुमार सुबह उठता है । वातावरण में नर्मी थी । वह स्टोव के पास जाता है । श्यामा भी वहीं फर्श पर बैठी थी । उसके होठों से लहू निकल रहा था । उसे श्यामा अपने आँचल से पोंछती है । कुमार श्यामा से क्षमा माँगता है । उसकी आँखों को कुमार झेल नही पाता । रात की घटना को वह दुर्घटना बतलाती है और उसके साथ 'अनाम' संबंध बतलाती है । वह जाने से पहले कुमार से कहती है - "कभी तुम्हें आने के लिए लिखूँ । पर आओ, तो कोई ऐसी वैसी बात सोचकर मन आना ।" [31] कुमार स्टोव जलाकर चाय बनाने लगता है । यहीं उपन्यास समाप्त होता है ।

विवेच्य उपन्यास के विवेचन के उपरान्त निष्कर्षत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास का मूल विषय समाज में बनते - बिगड़ते स्त्री पुरूष के नामहीन संबंधों का चित्रण ही है । साथ ही ऐसे बनते बिगड़ते स्त्री -पुरूष संबंधों के कारण परिवार तथा दांपत्य जीवन में किस प्रकार बिखराव आता है और उसी कारण आधुनिक युग के समाज पर उसका क्या असर होता है उसी का सही चित्रण इस उपन्यास में प्रस्तुत हैं । साथ ही नये तथा पुराने मूल्यों की टकराहट किस प्रकार हो रही है उसका चित्रण भी इसमें हुआ है ।

'अन्तराल' उपन्यास में कुमार और श्यामा के बीच बने नामहीन संबंधों का जो चित्रण प्राप्त है वह सिर्फ 'काम' के लिए ही स्थापित हो चुका है । इससे ज्ञात होता है कि राकेश के उपन्यासों में स्त्री - पुरूष के काम संबंधों का भी चित्रण हो चुका है ।

2.4 काँपता हुआ दरिया -

प्रस्तावना -

'काँपता हुआ दरिया' राकेश जी का चौथा उपन्यास है । यह उपन्यास उनकी मृत्यू के पश्चात संपादक जयदेव तनेजा ने प्रकाशित किया । यह उपन्यास राकेश जी की कश्मीर यात्रा पर आधारित है । जब वे कश्मीर गए थे तब उन्होंने वहाँ के लोगों का जो जीवन देखा था उसी को ही उन्होंने इसमें प्रस्तुत किया है । प्रस्तुत उपन्यास की संक्षेप में विषय वस्तु इस प्रकार हैं -

उपन्यास की शुरूआत उपन्यास के नायक खालका के 'नहीं - नहीं' शब्द से होती है । खालका किसी बात पर नाराज हैं । उसकी पत्नी बेगम की समझ में नहीं आता कि वह क्यों नाराज है । वह सोचती हुई

बावर्चीखाने चली जाती है । वहाँ उसकी बेटी नजमा है । घर का नौकर सिद्धीक चूल्हे के सामने चाय बना रहा है । वह बेगम तथा नजमा को चाय देना चाहता है परंतु वे दोनों इन्कार करती हैं । तब वह खालका के पास जाता है जो कि सोया हुआ था । वह वापस चला आता है । फिर बेगम को चाय देना चाहता है तो वह उसे डाँटती है । बेगम की डाँट से सिद्दीक को अपमान महसूस होता है । वह सोचता है "मै इस घर में कौन हूँ ?" [32] सिद्धीक आगे बहुत कुछ बातें करता रहता है ।

नजमा को अपने विवाहपूर्ण जीवन की याद आती है । बातों ही बातें में सिद्धीक नजमा का हाथ जबर्दस्ती अपने हाथ में ले लेता है । सिद्धीक का वह बर्ताव नजमा को अच्छा नहीं लगता । उसे बहुत गुस्सा आता है । नजमा उसे कादिर का भय दिखाती है । नजमा का गुस्सा देख वह खालका को यह बात न बतानें की बिनती करता है । क्योंकि खालका बीमार पड़ा है । उसे कहीं कुछ हो न जाय । मैं यह बकवास नहीं सुनना चाहती कहकर नजमा अंदर खालका के पास चली जाती है, यहाँ उपन्यास का पहला भाग पूरा हो जाता है ।

दूसरे भाग के शुरू में बेगम का मन जेहलम के दूर चले गए रास्ते पर भटक रहा है । उसे अपने बचपन की याद आती है । पिता नबी का जोर जोर से हँसना, अंग्रेज लोगों का औरतों के साथ घूमना, अपने गुजरे हुए भाई की याद आना आदि । खालका के बारें में बेगम ने जैसा सोचा था वैसा वह नहीं था । वह अपने दामाद से डरता था । इन्हीं विचारों की श्रृंखला में वह अपने डूँगे में चली जाती है । उसे मामदा के वापस न आने की खबर मिलती है तब वह नाराज हो जाती है । नजमा उसे अपने पति के डूँगे मे चले जाने की बात कहती है । तब सिद्धीक उसका विरोध करता है ।

नजमा और बेगम में नजमा के बच्चें और नूरा की काशिम के साथ शादी न करने का बेगम का फैसला आदि कारणों से उन दोनों में झगड़ा होता है । उसी समय नजमा को रोते देख खालका कहता है "रोओं नहीं नजमा ।" [33] यहाँ उपन्यास का दूसरा भाग समाप्त हो जाता है ।

तीसरे भाग के शुरू में खालका की हालत बिगड़ चुकी है । वह अपने पत्नी के समान खुलकर जीना चाहता है । परंतु जी नहीं सकता । उसकी आँखों के सामने अपने दांपत्य जीवन का चित्र झलकता है । पत्नी बेगम उसे चूमती है । वह अपनी प्यास बुझाना चाहती है । परंतु खालका अपने चाचा के डर से उसकी प्यास बुझाने में असमर्थ रहता है । इसी कारण वह उसके पास ही चुपचाप पड़ा रहता है । तब गुस्से में बेगम उसे कहती है - "तुम

आदमी हो ? तुम्हें तो घोंघा बनकर पैदा होना चाहिए था ।"[34] आगे वह यह भी कहती है कि "कोई आदमी का बच्चा तुम्हारी तरह नहीं डरता होगा ।"[35] तब खालका उसे समझाने का प्रयत्न करता है । लेकिन वह उसकी बातें नही सुनती । इसी तरह खालका को हर वक्त अपमानित होना पड़ता हैं ।

जब बेगम और कादिर को खुलेआम बातें करते तथा एक साथ बैठकर गप्पे हाँकते देख रमजान चाचा उपनर शक करता है तब बेगम और रमजान के बीच संघर्ष चलता है । उन दोनों का झगड़ा देख खालका वहाँ से सीधा कलकत्ता चला जाता है । वहाँ उसकी भेंट एलिस से हो जाती है । वह उसे अपने नजदीक नहीं आने देता । खालका वहाँ से सात साल बाद ही लौटता है ।

चौथे भाग के शुरू में बेगम खालका के पास चली जाती है । खालका उसे पूछता है - "कादिर के कारण तुम्हें जिन संकटों का सामना करना पड़ा उन्हें लेकर तुम परेशान तो नहीं हो ।" तब वह जवाब में कहती है "मैं उस बात को लेकर परेशान नहीं हूं ।"[36] बाद में दोनो नूरा के बारें में चिंता करते रहते हैं । यहाँ उपन्यास का चौथा भाग पूरा हो जाता है ।

पाँचवे भाग के शुरू में बेगम को नूरा और मामदा को ढूँढकर खाली हाथ ही वापस लौटना पड़ता है । तब गुस्से में वह खालका से कहती है कि "अगर और कुछ देर वह लौटकर नहीं आता तो सुबह उसकी खाल तुम मेरे हाथ में देख लेना ।"[37] बाद में वह नूरा के बारे में नजमा से बातें करती है । एक दिन वह खान के साथ अपनी माँ से मिलने जाने का फैसला कर निकलती है । यहाँ उपन्यास का पाँचवा भाग समाप्त हो जाता है ।

छठे भाग में भयानक तूफान के डर से सभी डूँगे दरिया में वापस लौटे हैं । बेगम अपने पूर्व जीवन में खो जाती है । कुछ क्षण बीत जाने के बाद उसकी भेंट खालका से हो जाती है । खालका सात साल बाद उसे मिलने आया था । तब खालका को देख नबी उसे गालिया देता है । नबी से परेशान खालका तुरंत श्रीनगर वापस लौटता है । बेगम भी उसके पीछे - पीछे श्रीनगर पहूँचती है, लेकिन खालका अभी तक वहाँ पहुँचा नहीं था । यहाँ उपन्यास का छठा भाग समाप्त हो जाता है ।

साँतवे भाग में नूरा और मामदा वापस लौटते है । मामदा के चले जाने पर बेगम नूरा को कुछ भूलीबुरी सुनाती है । वह उसे कहती है कि, "यदि करनी - करनी थी तुझे तो क्यों नहीं बाप से कह दिया ? किसी भी

कुत्ते के साथ तेरी शादी कर देता ।" [38] खालका भी नूरा को डाँटता है । उसके हाथ पीले करने के बाद ही वह हाज यात्रा पर चले जाने का निश्चय करता है ।

खान एक टुरिस्ट था । उसका बेगम के साथ बहुत घुलमिल जाना खालका को पसंद नहीं आता । वह उन दोनों पर शक करता है । खान कुछ दिन बाद पेशावर चला जाता है तो उसका एक खत भी नहीं वापस आता । बेगम उसके बारे में चिंतित रहती है । इधर खालका सपने में एलिस के नंगे शरीर के साथ चिपकता है । जब उसे बुलावा आता है तब उसका सामना रमजान चाचा से होता है । जब उसके चाचा उसे दरियाँ में फेंकना चाहते है तब वह होश में आ जाता है । उसी समय पाकिस्तान की सरहद से बहुत से कबाइली - दस्ते लूटमार के इरादे मीरपुर और पूँछ के इलाके में आने की खबर मिलती है । तब उनके डर से लोग चैन की नींद नहीं ले पाते । इसी समय सिद्धीक को अपने जमीन की चिंता सताती है । वह बारामुल्ला में जाकर अपनी जमीन देखने की जिद करता है । उसी समय सोपुर से नबी के गायब हो जाने की खबर मिलती है । तब उसें ढूँढ़ने के लिए सिद्धीक और खालका जाने की तैयारी करते हैं । यहाँ उपन्यास का साँतवा भाग समाप्त हो जाता है ।

उपन्यास के अंतिम याने आँठवे भाग में दोनों सोपुर पहुँचते हैं वहाँ के जले-अधजले घर, पड़ी हुई लाशे देखते हैं । रात को सोपुर में रहने के बाद सुबह बारामुल्ला की गलियों में घूमते रहते हैं । तब दोनों को नबी की थोड़ी बहुत जानकारी मिलती है । उसी वक्त खालका एक सपना देखता है । उसमें वह देखता है कि कबाइली दस्तों के आक्रमण में वह या नबी अकेले ही बचा हैं । अपने आस - पास बहुत सी लाशें देखता है । उन्हीं में से वह अकेला बचा है । अस्पताल में बच्चे रो रहे है । जब उसे होश आता है तब वह सिद्दीक को अकेला छोड़, नबी के ढूँ की बिना चिंता किए वापस लौटता है ।

सर्दियों के बाद गर्मि भी आकर गुजरने लगती हैं । परंतु एक भी टुरिस्ट उनके डूँगे में नही आता तो वह चिंतित रहती है । आसपास के सभी डूँगेवालों की भी यही हालत थी । ऐसी स्थिति में ही मामदा उनके पास रहने आता है । उसका और सिद्धीक का झगड़ा हो जाता है । तब कादिर के डूँगे में आग लगती है । कादिर की बीवी और बच्चे सही सलामत बच जाते है । सब जन आग किस तरह लगी होगी इसका अंदाजा लगाते रहते हैं । यहाँ पर उपन्यास समाप्त हो जाता है ।

उपर्युक्त उपन्यास का विवेचन करने के बाद निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि इस उपन्यास का मूल विषय कश्मीर के सौंदर्य में अपना घर बनाकर रहने वाले निम्नवर्गीय हाँजी परिवार के सुख-दु:खों का चित्रण करना है । कथावस्तु में कश्मीर के सौंदर्य के साथ साथ वहाँ रहने वाले जन - जीवन का चित्रण भी यथार्थ रूप से किया है । इस उपन्यास को देश-काल वातावरण की दृष्टि से देखने के बाद पता चलता है कि यह उपन्यास सन 1947-48 के आस - पास का है । क्योंकि इतिहास में वर्णित भारत - पाकिस्तान के बँटवारे का इस उपन्यास में उल्लेख है । साथ ही कश्मीर में स्थित पूँछ आदि का वर्णन भी ही । साथ ही आज के समान उन दिनों भी में पाकिस्तान की घुसखोरी तथा लूटमार, दंगा फसाद का चित्रण भी किया है ।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि यह उपन्यास भारत पाकिस्तान के बँटवारे का और सीमावर्ती भागों में रहनेवाले निम्नवर्गीय हाँजी परिवार का आईना है ।

2.5 स्याह और सफेद -

मोहन राकेश जी का पाँचवा उपन्यास है स्याह और सफेद । यह उपन्यास उनकी मृत्यु के पश्चात सं. जयदेव तनेजा ने प्रकाशित किया है । सं. जयदेव तनेजा के अनुसार यह रचना 'अंधेरे बंद कमरे' से भी पहले की रचना है । वे लिखते हैं - "जहाँ तक स्याह और सफेद का सवाल है, यह अंधेरे बंद कमरे से भी पहले की रचना है । कहते है, इसे राकेश ने प्रकाशन के लिए दे भी दिया था । परंतु फिर किन्हीं कारणों से स्वयं इसका प्रकाशन स्थगित कर दिया था ।" [39] राकेश का यह उपन्यास पूरा उपलब्ध नहीं है । इसके उपलब्धि के बारे में जयदेव तनेजा ने लिखा है - "राकेश के उस उपन्यास का यह नितांत आत्मकथात्मक - सा उपलब्ध अंश ही हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं ।" [40] जयदेव तनेजा ने जो अंश प्रकाशित किया है उसकी संक्षित कथावस्तु यहाँ प्रस्तुत है -

चंदन अब पुल की सीढ़ियाँ चलने लगता है तो अठ्ठाईस -उनतीस साल का राधेश्याम या राधेलाल नामक युवक उसे धीमे स्वर में पूछता है - "भाई साहब, टिकट थर्ड क्लास का है कि सेकेंड क्लास का ?" [41] तब चंदन को गुस्सा आता है । वह गुस्से में ही उसे बोलता है "आपको यह पूछने की जरूरत किसलिए है ?" [42] बाद में दोनों एक ही टैक्सी में बैठते हैं । राधेलाल सत्यरत्न को (जो कि चंदन का होनेवाला ससुर है ।) बुलाकर उसे कहता है कि "आप कोई फिक्र मत कीजिएगा हम वहाँ सब इंतजाम ठीक कर लेंगे ।" [43]

बाद में दोनों टैक्सी में बातें करते-करते आगे बढ़ते हैं । राधेलाल सिगरेट के कश खींचता हुआ चंदन से उनके परिवार के बारे में पूछताछ करता है । कुछ देर बाद टैक्सी एक होटल के सहन में जाकर रूकती है ।

दोनों होटल में प्रवेश करते हैं । वहाँ चंदन के लिए एक कमरा सजाकर रखा था । उसी कमरे में दोनों प्रवेश करते हैं । चंदन कमरे में जाकर अपने आप को थका हुआ महसूस करता है और बाथरूम में नहाने चला जाता है । जब नहाकर बाहर आता है तो अपने आपको प्रसन्न तथा ताजा महसूस करता है । वह बाहर आते ही देखता है कि 'राधेलाल अपनी डायरी में कुछ हिसाब लिख रहा था ।' तब तक चाय आती है । दोनो चाय लेते हैं । दोनों में अंडे, मांस खाने या न खाने पर चर्चा चलती है । शराब पीने पर भी बातचीत करते हैं ।

अंत में ज्ञात होता है कि सत्यरत्न की लड़की और चंदन की हानेवाली पत्नी शकुंतला तथा चंदन, दोनों भी एम्. एक. तक पढ़े लिखे हैं । जब दोनों का विवाह निश्चित हो जाता है तो शकुंतला की सहली विभा को चंदन की नौकरी के बारे में कुछ आशंकाएँ आती हैं । तब राधेलाल उनकी शंका का निराकरण करता है । बाद में दोनों होटल में बनने वाली चाय पर बातें करते रहते हैं । यहीं पर उपन्यास का जो प्रकाशित अंश है वह समाप्त हो जाता हैं ।

निष्कर्ष -

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हे कि राकेश जी के उपन्यासोंपर उनके अपने काल का गहरा प्रभाव दिखाई देता है । उनके अंधेरे बंद कमरे उपन्यास में लेखक ने एक ओर दिल्ली जैसे महानगर के परिवेश में व्याप्त समता - विषमता को रेखांकित किया है तो दूसरी ओर नीलिमा और हरबंस के अंतर्द्वंद्व की कहानी बतायी है । साथ ही लेखक ने इस उपन्यास में विवाहित जीवन की अर्थहीनता का सजीव चित्र खींचने का प्रयास किया है । इस उपन्यास में इबादत अली की बेटी का घर से निकल जाना और ठकुराईन को अपनी बेटी की शादी की चिंता सताना यह आर्थिक स्थिति का ही परिचायक है । 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में अनेक समस्याएँ सामने आती हैं । परंतु इस समस्याओं का समाधान दिखाई नहीं देता । लेकिन हर एक पात्र अपने अधिकार के लिए क्रांति और विरोध करने का संकेत देता है । कहा जा सकता है कि मोहन राकेश ने इस उपन्यास में दिल्ली महानगर का चित्रण और स्त्री - पुरुष के संबंधों की कटु अनुभूतियों को प्रस्तुत किया है ।

राकेश जी का दूसरा उपन्यास है 'न आने वाला कल' । इस उपन्यास में राकेश जी ने उन तमाम लोगों की अभावग्रस्त जिंदगी का चित्र खींचा है जो फादर बर्टन स्कूल जैसे दमघोंटू वातावरण में जी रहे हैं । यह उपन्यास अस्तित्ववादी चेतना का एक ऐसा उपन्यास है जो स्कूली जिंदगी पर आधारित होकर भी मध्यवर्गीय चेतना को ईमानदारी से प्रस्तुत करता है । इस उपन्यास में मानवीयता का रूप कहीं भी किसी भी रूप में नजर नहीं आता । उपन्यास के सभी पात्र अपनी जिंदगी में किसी न किसी कारण दुःखद जीवन जी रहे हैं । साथ ही इस उपन्यास में मानवीय संबंधों के विघटित स्वरूप गहरे रूप में मिलते हैं । इस उपन्यास में वर्तमान कालीन शिक्षा व्यवस्थापन भी तीखा व्यंग किया हैं । उपन्यास के सभी दांपत्य सुखमय जीवन जी ने के लिए झगड़ते दिखाई देते हैं । मगर किसी को भी सफलता नहीं मिलती । चाहे वह मनोज हो, चेरी हो या कोहली । हर एक के दांपत्य जीवन में किसी -न -किसी कारण बिखराव और तनाव पैदा होता है । इसी तनाव के कारण सभी एक - दूसरे से दूर भागना चाहते हैं । परंतु समाज के डर के कारण साथ - साथ रहते हैं । साथ - साथ रहते हुए भी वे घुटन महसूस करते हैं । स्पष्ट हैं कि इस उपन्यास में सुखमय दांपत्य जीवन की अपेक्षा दुःखमय दांपत्य जीवन अधिक दिखाई देता है ।

राकेश जी ने अपने तीसरे उपन्यास 'अन्तराल' में वर्तमान कालीन स्त्री-पुरूष के बीच परिस्थितियों के प्रभाव के कारण किस तरह अंतराल बना रहता है इसका चित्रण किया है । जटिल परिस्थितियों के फलस्वरूप दोनों के बीच का अंतराल मिट नहीं पाता । इस उपन्यास में लेखक ने स्त्री - पुरूष के बीच घटित होने वाले जटिल से जटिल और सरल से सरल अनुभूतियों का यथार्थ चित्रण किया है । उपन्यास में आधुनिक मानव-जीवन के संबंधों की कहानी अत्यंत सुंदर ढंग से चित्रित की है । साथ ही मनुष्य के पारिवारिक संबंधों के अतिरिक्त मनुष्य के जो निजी संबंध होते हैं उस पर भी प्रकाश डाला है ।

कहा जा सकता है कि 'अन्तराल' में पुराने और नवीन नैतिक मूल्यों का टकराव है । इस उपन्यास में यौन समस्या की ओर भी इशारा किया है । साथ ही श्यामा का संपूर्ण परिवार आर्थिक आधार पर टिका हुआ नजर आता है । प्रस्तुत उपन्यास पर अस्तित्ववाद की गहरी छाप दिखाई देती है । इस उपन्यास का मुख्य विषय है स्त्री पुरूष संबंध को परिभाषित करना । कुछ संबंध ऐसे होते हैं जिन्हें नाम नहीं दिया जाता । ऐसे ही अनाम संबंधों को बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है । आज के बदलते मानवीय संबंधों की ओर भी संकेत किया है ।

राकेश जी का चौथा प्रकाशित उपन्यास है 'कांपता हुआ दरिया' । इस उपन्यास में राकेश जी ने उन तमाम निम्नवर्गीय परिवार के लोगों के जीवन का चित्रण किया है जो कश्मीर के सौंदर्य में हाँजी का काम कर अपना निर्वाह करते हैं । परंतु जब इस भाग में नैसर्गिक या मानव निर्मित संकट आ जाता है तब वे लोग कैसे हवादलिल तथा भयभीत होकर अपनी जिंदगी गुजारते हैं इसका यथार्थ चित्रण किया है । साथ ही संकटों का सामना करते समय वहाँ के दम्पत्तियों का जीवन तथा उनका व्यवहार किस प्रकार रहता है उसकी ओर भी निर्देश किया है ।

अंत में कहा जा सकता है कि राकेश जी का उपन्यास साहित्य उनके अपने काल के समाज जीवन की, दांपत्य जीवन की जीती जागती तस्वीर है । इसमें कोई भी संदेह नहीं ।

संदर्भ ग्रंथ - सूची

1. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे (भूमिका), पृष्ठ - 7

2. वही, पृष्ठ - 9

3. वही, पृष्ठ -20

4. वही, पृष्ठ -47

5. वही, पृष्ठ - 115

6. वही, पृष्ठ - 130

7. वही, पृष्ठ - 160

8. वही, पृष्ठ - 270

9. वही, पृष्ठ - 291

10 डॉ. इंद्रनाथ मदान - हिंदी उपन्यास पहचान और परख, पृष्ठ -231

11. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ -315

12. डॉ. सुरेश सिनहा - हिंदी उपन्यास , पृष्ठ -350

13. विजय मोहन सिंह - आधुनिक हिंदी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना, पृष्ठ -388

14. मोहन राकेश - न आने वाला कल, पृष्ठ -7

15. वही, पृष्ठ -7

16. वही, पृष्ठ -14

17. वही, पृष्ठ - 21

18. वही, पृष्ठ - 33

19. वही, पृष्ठ - 43

20. वही, पृष्ठ - 62

21. वही, पृष्ठ - 66

22. वही, पृष्ठ -136

23. वही, पृष्ठ -140

24. वही, पृष्ठ -145

25. चंद्रकांत बांदिवडेकर - आधुनिक हिंदी उपन्यास सृजन और आलोचना, पृष्ठ -29

26. मोहन राकेश - अन्तराल, पृष्ठ -11

27. वही, पृष्ठ -51

28. वही, पृष्ठ -84

29. वही, पृष्ठ -163

30. वही, पृष्ठ -163

31. मोहन राकेश - अन्तराल, पृष्ठ -215

32. सं. जयदेव तनेजा - एकत्र, पृष्ठ -293

33. वही, पृष्ठ -304

34. वही, पृष्ठ -307

35. वही, मृष्ठ -307

36. वही, पृष्ठ -317

37. वही, पृष्ठ -319

38. वही, पृष्ठ - 348

39. वही, पृष्ठ -286

40. वही, पृष्ठ -286

41. वही, पृष्ठ - 391

42. वही., पृष्ठ -391

43. वही, पृष्ठ -392